International Journal of Multidisciplinary Research and Development
Online ISSN: 2349-4182, Print ISSN: 2349-5979, Impact Factor: RJIF 5.72
www.allsubjectjournal.com
Volume 3; Issue 4; April 2016; Page No. 194-195

मोहनलाल महतो 'वियोगी' और 'आर्यावर्त'

[1] कादम्बिनी मिश्रा, [2] डॉ. रमेश कुमार गोहे

[1] शोधछात्रा, हिन्दी विभाग, गुरू घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़।
[2] सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, गुरू घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़।

प्रस्तावना

मोहनलाल महतो 'वियोगी' अपनी प्रखर प्रतिभा से हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं को निष्ठापूर्वक समृद्ध करते रहे। 1936 अर्थात् छायावाद के अवसान के पश्चात् भी वे सृजनरत रहे। उनकी छायावादोत्तर रचनाओं का मूल स्वर राष्ट्रवाद एवं यथार्थवाद था। स्वाधीनता के पूर्व हिन्दी साहित्य अंग्रेजी साम्राज्यवाद से मुक्ति के लिए संघर्ष कर रहा था। अंग्रेजी शासन ने अपने साथ भारतीय जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में जो परिवर्तन लाया था उसके दूरगामी प्रभावों से हिन्दी का लेखक भली–भांति परिचित था। फलतः राष्ट्रीय और सामाजिक चेतना ने कवियों को यथार्थवादी सृजन की ओर प्रेरित किया। वियोगी जी 1942–43 ई. में पंडित रामदहिन मिश्र की प्रेरणा से राष्ट्रीय महाकाव्य 'आर्यावर्त' की रचना की। इसकी भूमिका स्वयं रादहिन मिश्र जी जो काव्यशास्त्र के मर्मज्ञ विद्वान थे ने लिखी है। उन्होने लिखा है– "आर्यवर्त का कवि भावुक होने के साथ–साथ साम्यवादी विचार का हैं उसके निबंध, कहानियाँ और कविताएं इसके प्रमाण है। इससे वह प्रगतिवाद महाकाव्य की श्रेणी में आता है। प्रगतिवादी इस अर्थ में कि वह नवीन विचारों का प्रचारक है, गतानुगतिकता का विरोधी है और प्राचीन परिपाटी का प्रतिगामी का विरोधी है और प्राचीन परिपाटी का प्रतिगामी है। .... क्योंकि इसके पढ़ने पर हमारी मनः स्थिति एक अलौकिक लोक में पहुँच जाती हे और हममें एक अभूतपूर्व नवजीवन का संचार हो जाता है।"[1] इस महाकाव्य की विशेषताओं की ओर इंगित करते हुए हिन्दी साहित्य के इतिहास में डॉ. नगेन्द्र ने लिखा है– "मोहनलाल महतो वियोगी का 'आर्यावर्त' इस युग का श्रेष्ठ ऐतिहासिक प्रबंध–काव्य है जिसकी रचना पृथ्वीराज चौहान और मुहममद गोरी संबंधी आख्यान के आधार पर हुयी है इसमें तेरह सर्ग हैं। जिसमें पृथ्वीराज की बंदी अवस्था, जयचंद का परिताप, संयोगिता के पराक्रम और पृथ्वीराज द्वारा शब्द भेदी वाण से गोरी के वध की कथा को अत्यंत प्रभावपूर्ण ढंग से नियोजित किया गया हे। देशभक्ति की भावना इसमें सर्वोपरि रही है। वातावरण चित्रण की सजगता, चरित्रांकन की यथार्थता, तत्सम शब्दों की प्रधानता और अतुकांत प्रवृति इसकी अन्य विशेषताएँ हैं।"[2] इतने प्रसिद्ध आख्यान को आधार बनाकर लिखे गए इस महाकाव्य की अपनी अलग चुनौतियाँ थी। इन चुनौतियों के विषय में 'वियोगी' जी स्वयं लिखते हैं– "इतिहास की प्रत्येक पंक्ति का पिछलगुआ बनाना मेरे लिए असंभव है। मैने वैसा किया भी नहीं अपने विचारों को मैंने पृथ्वीराज की कहानी को बहाना बनाकर आपके सामने रखने का प्रयत्न किया है।"[3] इस नवीनता के कारण नगेन्द्र जी इसे महत्वपूर्ण युद्ध–प्रबधों की श्रृखला में स्थान दिया है। वियोगी जी "एक राष्ट्रीय कवि के रुप में अपने महाकाव्य 'आर्यावर्त' की रचना के बाद जाने–जाने लगे थे, जिस महाकाव्य को आचार्य नंद दुलारे वाजपेयी ऐसे विख्यात समीक्षक ने सन् 1955 में अपने 'आधुनिक साहित्य' में बिहार की वृहत्रयी कहा था।"[4] पंडित नंद दुलारे वाजपेयी ने महाकाव्य के तीन प्रमुख लक्षण माने हैं। प्रथम रचना का सर्गबद्ध होना। द्वितीय शैली का गाम्भीर्य और तृतीय उसमें वर्णित विषयों की व्यापकता और महत्व।

आर्यावर्त केवल सर्गबद्ध कथानक है ऐसी बात नहीं यह महाकाव्य "भारत के उस सांस्कृतिक राष्ट्रीय घात–प्रतिघात का प्रतीक है जिसने भारतीय संस्कृति को पूर्णरुपेण झकझोर डाला। स्वाधीनता की समष्टिगत पुकार उस समय राष्ट्रीय एकता का स्वर धारण कर चुकी थी और वियोगी जी ने उसमें एक स्वर अपना डालकर उसकी महिमा को अत्यधिक बड़ा दिया।"[5]

महाकाव्य का कथानक प्रसिद्ध महाकाव्य पृथ्वीराज रासो से लिये जानें पर भी अभूतपूर्व नवीनता लिए हुए है। छः छः बार पराजित होने वाला गोरी सातवीं बार भारतीय सेना को परास्त कर सम्राट को बंदी बना लेता है। इसके विजयी होने में जयचंद का षडयंत्र है। कवि महारानी संयोगिता के माध्यम से समस्त भारतीय राज्यों को संगठित होने के लिए प्रेरित करते हैं।

"आये हैं मगधराज, अंगराज, बंगराज
शासक भी आये हैं विदर्भ पांचाल के
सारा आर्य–देश आज नीचे आर्यध्वज के
उद्यत है मर मिटने को एक साथ ही
सीस ले हथेली पर भेद–भाव भूल के।"[6]

महाराज पृथ्वीराज की पराजय केवल एक व्यक्ति की पराजय नहीं है अपितु महान आर्यदेश की पराजय है अतः कवि महारानी के व्यक्तित्व में निराशा एवं हताशा के समय उत्साह का संचार कर साक्षात् दुर्गा के रुप में उनका आव्हान करता है। महारानी स्वयं युद्ध संचालन करेंगी ऐसा कहते हुए कवि ने जिस रुप का स्मरण किया उसका चित्र कुछ इस प्रकार है–

"क्रुद्ध सिंहनी सी महिषी ने दीप्त क्रोध से
एक बार देखा दांत पीस के भवानी को
कांप उठी प्रतिमा प्रदीप बुझा धीरे से
फूट गया मंगल–कलश और रवि का
तेज मंद पड़ गया दिशाएँ स्तब्ध हो गयी
उल्काएं असंख्य गिरी, कांपी धीर वसुधा ....।"[7]

महारानी ने संदेश भेज दिया कि समर अभी शेष है। महारानी एवं कवि चंद द्वारा संगठित सेना ने समस्त भारत–वर्ष के लिए युद्ध किया।

पृथ्वीराज शब्दभेदी वाण चलाना जानते थे। इस कथा के विषय में एक लोक विश्रुत उक्ति प्रसिद्ध है –

चार बांस चौबीस गज अंगुल अष्ट प्रमाण
एते पर सुल्तान है मत चूको चौहान।।

वियोगी जी के आर्यावर्त में भी शब्द भेदी वाण का उल्लेख किया गया है –

"सावधान होके शब्द भेदी वाण मारिए
मैं हूँ खड़ा आपके ही पार्श्व मे ये वाण हैं।"[8]

आगे है –

".....शत्रु मारा गया लीजिए
यह तलवार है प्रहार करें मुझ पर
और मैं प्रहार करु आप पर।"[9]

इस प्रकार आर्यावर्त का कथानक पृथ्वीराज एवं चंद दोनों के वीरत्व एवं महान आत्मोत्सर्ग के साथ संपन्न होता है। कवि ने पृथ्वीराज चौहान के रुप में भारत के पूँजीभूत गौरव को देशभक्ति की प्रेरणा पूर्ति के रुप में अंकित किया है जिसकी राष्ट्रीय आंदोलन के समय महती आवश्यकता थी इस महाकाव्य के द्वारा कवि ने राष्ट्रप्रेम एवं कवित्व का अमिट उदाहरण प्रस्तुत किया है।

एक छायावादी कवि युद्ध–प्रबंध की रचना कर रहा है। निश्चित रुप से छायावादी वैशिष्ट्य उसके शिल्प में समाहित है। कवि के प्रकृतिक सौन्दर्य का वर्णन द्रष्टव्य है –

"दिनमणि डूब गया तम के समुद्र में,
आयी चुपचाप संध्या शोकातुर विह्वला।
गूँज उठा झिल्ली रव नूपुर निनाद सा,
भीरु अंधकार लगा झांकने निकुंजो से
रात ने न देखा कभी रवि को न रवि ने
रात को निहारा भूल के भी आंख भरके
किन्तु निशा रोती है अधीर बनी रात को
रवि के वियोग में इधर रवि दिन में
हाय तपते है, निशारानी के विरह में
कैसी यह प्रीति है, वियोग यह कैसा है।"[10]

इसी प्रकार रात्रि के आगमन का अनुपम दृश्य है –

"चांदनी का आंाचल संभालती सकुचाती
गोद में खेलती चंद्र चंद मुख चूमती
झिल्ली रव गूंजा चली मानों वन देवियाँ
लेने को वलैयां निशारानी के सलौने की।"[11]

वियोगी जी की इन पंक्तियों में सांगरुपक, मानवीकरण शब्दालंकार और उत्कृष्ट उत्प्रेक्षालंकार का चमत्कार देखते बनता है।

इस महाकाव्य में वीर–रस की प्रधानता है। करुण रस, एवं श्रृंगार रस के कतिपय बूंदो के भी दर्शन होते हैं। इसकी अलंकार योजना के विषय में श्री रामनिरंजन परिमलेंदु जी लिखते हैं – "प्रसाद गुण–विशिष्ट आर्यावर्त में अलंकारों का अक्षय वैभव है। अलंकारमय इस महाकाव्य में उत्प्रेक्षा अलंकारों का बाहुल्य है। पाश्चात्य काव्यालंकारों में तीन अलंकार प्रमुख है– मानवीकरण, ध्वन्यर्थ–व्यंजना और विशेषण विपर्यय। छायावाद और छायावादोत्तर हिन्दी काव्य में इसकी प्रधानता रही है जिसके फल स्वरुप भाषा की चित्रमयता और अर्थव्यंजना की गौरव वृद्धि ही हुयी है।"[12]

आर्यावर्त के पात्रों की बात की जाए तो सर्वप्रथम जो महत्वपूर्ण तथ्य सामने आता है वह है कविचन्द का नायक होना। "आर्यावर्त का चरित–नायक एक महायुद्ध काव्य का चरित नायक है।"[13] नायक के इस्पात जैसे चरित्र का सृजन कवि ने दृढ़ता पूर्वक किया है। चन्द पृथ्वीराज का आश्रित सखा था। फिर भी कठोर कर्तव्य के पालनार्थ उसने कवि कर्म को छोड़ राष्ट्रधर्म का निर्वहन किया।

पृथ्वीराज पराजित एवं खंडित मनोबल के साथ सामने आते हैं किन्तु चंद के सहयोग और प्रेरणा से गौरी को समाप्त करने में सफल होते हैं। अंत में दोनो आत्म सम्मान एवं राष्ट्रसम्मान के रक्षार्थ आत्मोत्सर्ग करते हैं।

'वियोगी' जी ने महाकाव्य के स्त्री पात्रों के चरित्र में विद्युत का संचार किया है। वे कोमल–कमनीय कलेवरा न होकर साक्षात् रण–चण्डी के रुप में चित्रित की गयी है। " 'आर्यावर्त' की नारियाँ साधारण नारीमूर्ति से उपर के स्तर की है। पुरुष का विकास होता है तो वह अपने ही आप में मग्न होकर महायोगीश्वर बन जाता है किन्तु जब स्त्री–शक्ति का विकास होता है तब वह सृष्टि–स्थिति लयकारिणी होकर पराशक्ति के रुप में परिणत होकर दुर्दमनीय हो उठती है। आर्यावर्त में ऐसी ही पूर्ण विकसित नारी मूर्तियों को स्थान दिया गया है।"[14]

पंडित रामदहिन मिश्र जी ने 'आर्यावर्त' को बिहार में खड़ी बोली का प्रथम महाकाव्य कहा है। इस विषय में श्री रामनिरंजन परिमलेंदु जी का कथन द्रष्टव्य है– "आर्यावर्त के गौरव को किसी प्रांत विशेष तक सीमित करना अनुचित ही है। ऐसा कर हम इस कृति का अवमूल्यन ही करते हैं। सम्पूर्ण भारत के राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में इस राष्ट्रीय महाकाव्य से राष्ट्रधर्म का संदेश प्राप्त होता है अतः यह कालजयी कृति है।"[15]

रामधारी सिंह 'दिनकर' का कथन है कि महाकाव्य की रचना मनुष्य को विकल करने वाली अनेक भावधाराओं के बीच सामंजस्य लाने का प्रयास है, समय के परस्पर विरोधी प्रश्नों के समाधान की चेष्टा है। इसप्रकार महाकाव्य की कसौटी पर आर्यावर्त खरा उतरता है। देश काल चरित्र विस्तार और काव्य–संपत्ति की दृष्टि से यह एक सजीव महाकाव्य है। जीवन की गरिमा का सुन्दर एवं सजीव परिचय हमें इस महाकाव्य से प्राप्त होता है।

संदर्भ ग्रंथ

1. मोहनलाल महतो वियोगी, 'आर्यावर्त', वियोगी साहित्य परिषद् रामसागर रोड, गया, 61 पृ.सं.–3
2. डॉ. नगेन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, मयूर पेपर बैक्स, ए 95 सेक्टर 5, नोएडा, सं.–2010 पृ.सं.–6–27
3. मोहनलाल महतो वियोगी, 'आर्यावर्त', वियोगी साहित्य परिषद् रामसागर रोड गया, 61 पृ.सं.–1
4. दृष्टि (त्रैमासिक पत्रिका) संपादक–डॉ. दिवाकर, मोहनलाल महतो वियोगी विशेषांक, 45–46 (जनवरी–सितंबर) 1991 पृ.सं. –73
5. वही
6. मोहनलाल महतो वियोगी, 'आर्यावर्त', वियोगी साहित्य परिषद् रामसागर रोड गया 61, पृ.सं.–74
7. दुष्टि (त्रैमासिक पत्रिका) संपादक–डॉ. दिवाकर, मोहनलाल महतो वियोगी विशेषांक 45–46 जनवरी–सितंबर 1991 पृ.सं. –145
8. वही पृ.सं.–136
9. वही, पृ.सं.–10
10. मोहनलाल महतो वियोगी, 'आर्यावर्त', प्रथम सर्ग वियोगी साहित्य परिषद् रामसागर रोड गया 61, पृ.सं.–3
11. मोहनलाल महतो वियोगी, 'आर्यावर्त' चतुर्थ सर्ग, वियोगी साहित्य परिषद्, रामसागर रोड गया 61, पृ.सं.44–45
12. श्री रामनिरंजन परिमलेन्दु, भारतीय साहित्य के निर्माता, मोहनलाल महतो वियोगी, साहित्य अकादमी, संस्करण 2010, पृ. सं.–74
13. मोहनलाल महतो वियोगी, 'आर्यावर्त' वियोगी साहित्य परिषद् रामसागर रोड गया 61, पृ.सं.–7
14. मोहनलाल महतो वियोगी, पृ.सं.–23
15. भारतीय साहित्य के निर्माता, पृ.सं.–75